सम्मेलन प्रविधि

(conference Technique)

शिक्षा के क्षेत्र में अधिगम के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रविधि है। इस प्रविधि का उपयोग अनुदेशन एवं अधिगम परिस्थितियों को उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। शिक्षा के ज्ञानात्मक एवं भावात्मक उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। एक बड़े समूह की सभा का आयोजन होता है। इसके अन्तर्गत तात्कालिक गम्भीर समस्याओं पर विचार किया जाता है। उदाहरणस्वरूप निर्गुट देशों का सम्मेलन (NAM) मार्च 1993 में हुआ था। इनका मुख्य लक्ष्य 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति' रखना है। इससे सम्बन्धित विविध समस्याओं पर विचार किया गया था।

सन् 1920 से सम्मेलन प्रविधि को अधिक बढ़ावा दिया गया है। इसमें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक,

मानवशास्त्र की व्यापक समस्याओं पर विचार किया गया।

सन् 1930 में अन्त:विषयक (Interdisciplinary) सम्बन्धी समस्याओं के सम्मेलनों का आयोजन किया गया। शोध कार्यों में अन्त:विषय समस्याओं को बढ़ावा मिला।

सन् 1940 में तात्कालिक उपयोग एवं समस्याओं के समाधान पर सम्मेलनों का आयोजन हुआ। इसके परिणामस्वरूप शोध कार्यों को भी नयी दिशा मिली। इस समय में प्रगति की योजनाओं के मूल्यांकन, शोध के परिणामों के मूल्यांकन तथा नवीन प्रत्ययों के प्रयोग के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु सम्मेलनों का आयोजन हुआ। सन् 1950 में शैक्षिक विषयों पर सम्मेलनों के आयोजनों को

प्राथमिकता दी गई। आधुनिक समय में सम्मेलन प्रविधि का महत्व प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में सम्मेलन प्रविधि का उपयोग किया जाता है। प्रजातन्त्र के मूल्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये सम्मेलन प्रविधि का विशेष महत्व है। अंग्रेजी में सम्मेलन को कई शब्दों से सम्बोधित किया जाता है। जैसे-कॉन्फ्रेंस (Conference), कन्वेन्शन (Convention) तथा सम्मेलन आदि।

सम्मेलन प्रविधि का अर्थ एवं परिभाषा

(Meaning and Definition of Conference)

शिक्षकों, अनुदेशकों तथा निर्देशकों की एक सभा होती है, जिसमें कक्षा, अनुदेशन एवं विद्यालय

सम्बन्धी समस्याओं पर वाद-विवाद किया जाता है और वे किसी निर्णय पर पहुंचते हैं।

"A Conference is a meeting of individuals called together to engage a

discussion with the aim of accomplishing a limited task with in restricted”

"सम्मेलन व्यक्तियों की एक सभा होती है, जिसमें उन्हें एक साथ किसी विशिष्ट कार्य या समस्या पर चिन्तन तथा वाद-विवाद एक निश्चित समय में करना होता है।". 'साधरणतः सम्मेलन किसी संगठन द्वारा आयोजित किया जाता है।" संगठन के स्थायी सदस्य होते हैं। संगठन की कार्यकारिणी होती है, जिसमें अध्यक्ष, मन्त्री, कोषाध्यक्ष तथा अन्य सदस्य होते हैं। यह संगठन प्रतिवर्ष किसी प्रकरण एवं समस्या पर सम्मेलन का आयोजन करता है। इसमें सदस्यों को आमन्त्रित किया जाता है। प्रत्येक संगठन का अपना एक व्यापक लक्ष्य होता है। उसी दिशा में सम्मेलन के प्रकरण या . समस्या का चयन किया जाता है। सम्मेलन की अध्यक्षता संगठन का अध्यक्ष करता है और मन्त्री सम्मेलन की व्यवस्था करता है। विशेषज्ञों को भी अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया जाता है।

सम्मेलन का आयोजन विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक संगठनों द्वारा किया जाता

है। शैक्षिक क्षेत्र में विभिन्न विषयों के संगठनों द्वारा सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। विशेष रूप में आज शोध के क्षेत्र में सम्मेलनों के आयोजनों को प्राथमिकता दी जाती है। सम्मेलन का आयोजन तीन स्तरों पर किया जाता है। क्षेत्रीय स्तर के सम्मेलन वे हैं जिसमें क्षेत्र की समस्याओं को प्राथमिकता दी जाती है। राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में हैं, जिसमें राष्ट्र सम्बन्धी शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं को महत्व दिया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में मानवीय समस्याओं, वैज्ञानिक आविष्कारों, नवीन आयामों सम्बन्धी समस्याओं पर चिन्तन एवं विवेचन किया जाता है।

सम्मेलन प्रविधि के उद्देश्य (Objectives of Conference)

राष्ट्र, समाज, धर्म एवं शिक्षा व विज्ञान की विशिष्ट एवं तात्कालिक समस्याओं के अध्ययन

एवं विवेचन का सम्मेलन एक प्रमख प्रविधि है। सम्मेलन का उद्देश्य अधिक व्यापक

ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्षों के विकास के लिये किया जाता है। सम्मेलन का लक्ष्य संगठन द्वारा

निर्धारित किया जाता है। जैसे-'निर्गट देश' संगठन का लक्ष्य अन्तराष्ट्रीय शान्ति स्थापित करना।

इस प्रकार 'अध्यापक शिक्षा संघ' का लक्ष्य अध्यापक शिक्षा में विकास एवं प्रगति करना।

भारतीय शैक्षिक तकनीकी संघ का लक्ष्य शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग एवं विकासकरना।'

इस प्रकार सम्मेलन के उद्देश्य संगठन द्वारा निर्धारित किये जाते हैं। परंतु सामान्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं-

(अ) ज्ञानात्मक उद्देश्य (Cognitive Objective)-सम्मेलन प्रविधि के ज्ञानात्मक उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन की क्षमताओं का विकास करना।
2. आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना, तर्कशक्ति का विकास करता
3. निरीक्षणों एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति की क्षमताओं का विकास करना। तो गहनता से अध्ययन की क्षमताओं का विकास करना।
4. सम्बन्धित विषय एवं समस्या के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।

(ब) भावात्मक उद्देश्य (Affective Objectives)-इस प्रविधि से निम्नलिखित भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति होती है-

1. किसी प्रत्यय एवं तथ्य को व्यापक रूप में बोधगम्य करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
2. भावात्मक सन्तुलन की प्रवृत्ति का विकास करना।
3. विरोधी विचारों के प्रति सम्मान एवं सहनशीलता का विकास करना।
4. सहयोग की भावना एवं विचारों की स्वच्छन्दता का विकास करना।

सम्मेलन में भाग लेने से व्यावहारिक कौशलों एवं अच्छी संस्कृति का विकास होता है। इस बात का प्रशिक्षण होता है कि किस प्रकार अपने विचारों को प्रस्तुत किया जाये और किस प्रकार प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का स्पष्टीरकण किया जाये।

सम्मेलन प्रविधि की प्रक्रिया (Procedure of Conference Technique)

सम्मेलन प्रविधि में पच्चीस, तीस से लेकर सैकड़ों सदस्य भाग लेते हैं। सम्मेलनों का आयोजन समकालिक (Periodical) रूप में किया जाता है। सम्मेलन में सदस्यों के अतिरिक्त व्यावसायिक विभिन्न रुचियों के विशेषज्ञों को आमन्त्रित किया जाता है। संगठन के अध्यक्ष एवं मन्त्री सम्मेलन के कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। सम्मेलन की सभा का प्रकरण अधिक व्यापक होता है, जिसके

विभिन्न पक्षों पर विचार किया जाता है। प्रकरण के विभिन्न पक्षों पर प्रपत्र (Papers) भी आमन्त्रित किये जाते हैं, जिन पर प्रतिलिपियाँ तैयार कर ली जाती हैं। सम्मेलन का समय तीन से दस दिन तक रखा जाता है।

साधारणतः सम्मेलन का आयोजन तीन अवस्थाओं में होता है।

प्रथम अवस्था (First Stage)-प्रथम अवस्था में समस्त सदस्यों का पहले पंजीकरण

जाता है, समयानुकूल सभा होती है। उसकी अध्यक्षता संगठन का अध्यक्ष करता है और मंत्री उसकी अनुमति से सम्मेलन का संचालन करता है। पूर्व सभा के कार्यक्रम की पुष्टि की जाती है । तत्पश्चात प्रपत्र प्रस्तुत किये जाते हैं। इस अवस्था में सम्मेलन का उद्घाटन समारोह होता है। प्रमुख प्रपत्रों के प्रस्तुतीकरण के पश्चात अध्यक्ष सम्मेलन के सदस्यों को प्रकरण के विभिन्न पक्षों के आधार पर समूहों में विभाजित कर देता है। यह समूह अलग-अलग कमरों में अपने वाद विवाद का आयोजन करते हैं।

द्वितीय अवस्था (Second Stage)-द्वितीय अवस्था में सामूहिक कार्य की व्यवस्था की जाती

रोक समूह का एक संचालक (Convener) नियुक्त किया जाता है। वह समूह के कार्यक्रम की व्यवस्था एवं संचालन करता है। इस अवस्था में प्रकरण सम्बन्धी प्रपत्र पढ़े जाते हैं। सदस्यगण अपने अनुभव एवं विचारों को प्रस्तुत करते हैं। प्रपत्र का अनुसरण वाद-विवाद से होता है। इसका आलेख भी तैयार किया जाता है। संचालक विचारों का संगठन करता है और अपने विचार भी रखता है। सामूहिक कार्य एक दिन से अधिक भी चलता है। सामूहिक कार्य के अन्त में संचालक एक आलेख तैयार करता है, जिसमें समूह के चिन्तन और विवेचन को सम्मिलित किया जाता है।

तृतीय अवस्था (Third Stage)-इस अवस्था में सभी समूह एक ही स्थान पर एकत्रित होते हैं, जहाँ वह प्रथम अवस्था में एकत्रित हुये थे। इसे समापन समारोह भी कहते हैं। सभी समूहों के संचालक अपने कार्य के आलेख को प्रस्तुत करते हैं। अन्य समूहों के सदस्यों को प्रस्तुतीकरणों पर प्रतिक्रिया करने का अवसर दिया जाता है। इस प्रकार सभी समूहों के आलेखों को एकत्रित करके सम्मेलन की उपलब्धियों का आलेख तैयार किया जाता है। इस अवस्था में आगामी बैठक कहाँ और कब होगी यह भी निर्णय ले लिया जाता है। यदि कार्यकारिणी के सदस्यों का कार्यकाल समाप्त हो गया है तब नई कार्यकारिणी के अध्यक्ष, मन्त्री एवं सदस्यों का चयन किया जाता है। यह कार्य प्रथम अथवा तृतीय दोनों अवस्थाओं में से किसी में भी किया जा सकता है। सम्मेलन के कार्यों का प्रसारण समाचार-पत्रों में भी किया जाता है।

सम्मेलन प्रविधि की प्रक्रिया में साधारणतः निम्नलिखित भूमिका निभानी होती हैं-सम्मेलन का

अध्यक्ष एवं मन्त्री होता है, वही सम्मेलन की व्यवस्था एवं संचालन करता है। विचारों को संगठित करना, वाद-विवाद को प्रकरण पर रखना भी उसका कार्य होता है तथा अन्त में उसे वक्ताओं, अतिथियों एवं सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करना होता है। वक्तागण अपने प्रपत्रों के प्रमुख पक्षों को प्रस्तुत करते हैं तथा सदस्यों की प्रतिक्रियाओं पर अपना स्पष्टीकरण देते हैं। सदस्यगण अपने अनुभवों एवं निरीक्षणों को प्रस्तुत कर सकते हैं और प्रकरण से सम्बन्धित समस्याओं को रख सकते हैं। सदस्यों को दूसरों के विचारों की सराहना करने तथा आलोचना करने का पूर्ण अधिकार होता है। अध्यक्ष का चयन संगठन के स्थायी सदस्यों में से ही किया जाता है। निर्गुट देश सम्मेलन (1986) में श्रीमति इन्दिरा गाँधी को अध्यक्ष चुना गया था।

सम्मेलन प्रविधि की विशेषताएँ

(Advantages of Conference)

सम्मेलन प्रविधि का प्रयोग शिक्षा के उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये किया जाता है। इससे ऐसी अधिगम परिस्थितियों को उत्पन्न किया जाता है, जिससे समस्या समाधान, आलोचनात्मक, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन करने की योग्यताओं का विकास किया जाता है। इसकी प्रमुख

विशेषतायें इस प्रकार हैं-

(1) प्रजातांत्रिक परम्पराओं एवं मूल्यों का विकास किया जाता है।

(2) सम्मेलन में ऐसे प्रकरण पर वाद-विवाद किया जाता है, जिसमें सभी सदस्यों की रुचि

होती है।

(3) सम्मेलन में भाग लेने के लिये सदस्य स्वयं इच्छुक रहते हैं, क्योंकि उस संगठन में उनकी

आस्था अधिक है।

(4) सम्मेलन के आयोजन तथा उसमें भाग लेने वतन्त्र अध्ययन की प्रवृति का

होता है।

(5) समस्या समाधान की क्षमताओं का विकास होता है या समझने का अवसर मिलता है।

(6) सामाजिक एवं भावात्मक गणों का विकास होता है, अपनी बात रखने या आलोचना करने की शिष्टता का विकास होता है।

(7) दूसरों के विरोधी विचारों के प्रति सम्मान एवं सहनशीलता का विकास होता है।

(8) अपने निरीक्षणों एवं विचारों के स्पष्टीकरण का अवसर मिलता है।

सम्मेलन प्रविधि की सीमाएँ

(Limitations of Conference Technique)

सम्मेलन प्रविधि की निम्नांकित सीमायें भी हैं-

(1) सम्मेलन में कितने सदस्यगण उपस्थित होंगे, इसका अनुमान लगाना कठिन होता इसलिये उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था करना प्रमुख समस्या रहती है।

(2) सम्मेलन की सफलता का मूल्यांकन करना भी कठिन होता है।

(3) सम्मेलन का प्रकरण अधिक व्यापक होता है, इससे वाद-विवाद सीमांकन करना ही सम्भव नहीं होता है।

(4) साधारणतः जो व्यक्ति अधिक बोल लेते हैं वही व्यक्ति सभी अवस्थाओं में सक्रिय रहने हैं। अन्य सदस्यों को अवसर नहीं मिलता है।